International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 02, Feb 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

"जौनपुर का प्राचीन इतिहास और पुरातात्विक वैभव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० प्रीतम कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर , प्राचीन इतिहास विभाग

काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर,भदोही ।

सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद के उन ऐतिहासिक पक्षों को उजागर करता है जो मध्यकालीन 'शर्की काल' के वैभव के नीचे दब गए हैं। जौनपुर को प्रायः 14वीं शताब्दी का शहर माना जाता है, किंतु पुरातात्विक साक्ष्य और पौराणिक संदर्भ इसे त्रेतायुग और मौर्य-गुप्त काल से जोड़ते हैं। यह शोध गोमती तट पर स्थित प्राचीन बसावटों, जफराबाद के दुर्ग और स्थानीय मूर्तिकला के माध्यम से जौनपुर के विस्मृत प्राचीन इतिहास को पुनर्जीवित करने का प्रयास है।

कीवर्ड:

जौनपुर, जमदग्निपुर, मौर्यकाल, जफराबाद, गोमती सभ्यता, पुरातात्विक अवशेष।

प्रस्तावना :

जौनपुर, जिसे 'शिराज-ए-हिंद' के नाम से ख्याति मिली, का इतिहास केवल फिरोज शाह तुगलक द्वारा 1359 ईस्वी में बसाए जाने तक सीमित नहीं है। वायु पुराण और रामायण कालीन संदर्भों में इस क्षेत्र को 'यमनदग्निपुर' कहा गया है, जो महर्षि जमदग्नि की तपोभूमि थी। गोमती नदी के घुमावदार तटों ने प्राचीन काल से ही मानव बस्तियों को आकर्षित किया है। यह शोध पत्र उन कड़ियों को जोड़ने का प्रयास है जो सिद्ध करती हैं कि जौनपुर एक प्राचीन सांस्कृतिक केंद्र रहा है।

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जौनपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में स्थित है। इसके उत्तर में आज़मगढ़, दक्षिण में वाराणसी और पूर्व में गाजीपुर जिले स्थित हैं। गोमती नदी नगर के मध्य से होकर बहती है, जिसने इस क्षेत्र की आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया।

नदी-तटीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ प्रारंभिक मानव बसावट की संभावना अधिक रही। उपजाऊ भूमि, जलस्रोत और प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ने इसे प्राचीन काल से ही बसाहट के लिए उपयुक्त बनाया।

पौराणिक पृष्ठभूमि एवं नामकरण

जौनपुर का प्राचीन नाम 'यमनदग्निपुर' महर्षि जमदग्नि से प्रेरित माना जाता है।

- **जमैथा आश्रम:** शहर से 8 किमी दूर स्थित जमैथा गाँव को महर्षि जमदग्नि की तपोभूमि माना जाता है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार, यह वही स्थान है जहाँ भगवान परशुराम का जन्म हुआ था।
- **सांस्कृतिक निरंतरता:** यहाँ के स्थानीय मेलों और लोककथाओं में आज भी ऋषि जमदग्नि और राजा कीर्तिवीर्य अर्जुन के संघर्ष की स्मृतियाँ सुरक्षित हैं, जो इस क्षेत्र की प्राचीनता का प्रमाण देती हैं।
- **बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में उल्लेख:** कौशाम्बी और काशी के बीच के व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण इस क्षेत्र का उल्लेख प्राचीन यात्रा वृत्तांतों में मिलता है।

प्राचीन काल : जनपदों से साम्राज्य तक

वैदिक और उत्तरवैदिक काल में यह क्षेत्र काशी और कौशल जनपदों के प्रभाव में रहा। यद्यपि प्रत्यक्ष प्रमाण सीमित हैं, परंतु भू-सांस्कृतिक समानताएँ इस संभावना को बल देती हैं कि जौनपुर क्षेत्र प्राचीन जनपदीय संरचनाओं का अंग रहा।

- **मौर्य काल**

मौर्य साम्राज्य के विस्तार के साथ यह क्षेत्र भी प्रशासनिक व्यवस्था में सम्मिलित हुआ। अशोक के काल में उत्तर भारत में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ, जिसका प्रभाव पूर्वांचल क्षेत्र में भी पड़ा होगा। प्रत्यक्ष स्तंभ या शिलालेख भले ही यहाँ उपलब्ध न हों, परंतु सांस्कृतिक प्रसार के संकेत मिलते हैं।

- **गुप्त काल**

गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में कला, साहित्य और धर्म का विकास हुआ। जौनपुर क्षेत्र में प्राप्त मूर्तिकला और मंदिर अवशेष इस युग की सांस्कृतिक गतिविधियों की ओर संकेत करते हैं। गुप्तोत्तर काल में उत्तर भारत में क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। जौनपुर क्षेत्र भी विभिन्न राजवंशों के प्रभाव में रहा। राजपूत शासकों द्वारा किलों और ग्राम संरचनाओं का निर्माण इस काल की विशेषता थी। ग्रामीण समाज में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और स्थानीय मंदिर संरचनाएँ सामाजिक जीवन का केंद्र बनीं।

तुगलक काल और जौनपुर की स्थापना

14वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत के शासक फिरोजशाह तुगलक ने जौनपुर नगर को व्यवस्थित रूप दिया। कहा जाता है कि इसका नाम "जौना खाँ" (मुहम्मद बिन तुगलक) की स्मृति में रखा गया। इस काल में जौनपुर सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण केंद्र बना।

शर्की शासन और सांस्कृतिक उत्कर्ष

1394 ई. में मलिक सरवर द्वारा शर्की सल्तनत की स्थापना की गई। यह काल जौनपुर का स्वर्ण युग माना जाता है। शर्की शासकों ने शिक्षा, स्थापत्य और सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ावा दिया।

- **प्रशासनिक व्यवस्था**

स्थानीय स्तर पर न्याय और कर व्यवस्था में संतुलन स्थापित किया गया।

- **शिक्षा और विद्या**

जौनपुर को "शिराज़-ए-हिंद" कहा गया क्योंकि यहाँ मदरसों और विद्वानों की बड़ी संख्या थी।

गुप्त और गहरवार वंश का प्रभाव

कन्नौज के राजाओं और गहरवार वंश के शासकों के अधीन यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई था। जौनपुर के पास मिले कुछ ताम्रपत्र और सिक्कों से पता चलता है कि 11वीं और 12वीं शताब्दी में यहाँ एक व्यवस्थित हिंदू शासन था, जिसे बाद में दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों का सामना करना पड़ा।

जफराबाद: प्राचीन सभ्यता का केंद्र

जौनपुर शहर से कुछ दूरी पर स्थित जफराबाद (प्राचीन नाम 'मनिच' या 'मनिचगढ़') इस क्षेत्र का सबसे पुराना ऐतिहासिक स्थल है।

- **शिलालेख:** यहाँ से प्राप्त कुछ प्राचीन शिलालेखों और मूर्तियों के अवशेषों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि यहाँ 11वीं शताब्दी तक गहरवार वंश के राजाओं का अधिपत्य था।
- **दुर्ग के अवशेष:** जफराबाद के टीले और पुराने दुर्ग की दीवारें आज भी वैज्ञानिक उत्खनन (Excavation) की प्रतीक्षा कर रही हैं, जो जौनपुर के हिंदू-बौद्ध काल के इतिहास को स्पष्ट कर सकती हैं।

गोमती नदी का ऐतिहासिक महत्व

गोमती नदी ने जौनपुर के विकास में वही भूमिका निभाई जो नील नदी ने मिस्र में। प्राचीन काल में जलमार्ग ही व्यापार का मुख्य साधन थे, जिससे जौनपुर (यमनदग्निपुर) एक समृद्ध व्यापारिक केंद्र बना। हस्तशिल्प, वस्त्र निर्माण और धातु उद्योग विकसित थे। स्थानीय बाजारों से वस्तुओं का आदान-प्रदान होता था।

पुरातात्विक वैभव

जौनपुर की पहचान उसके स्थापत्य और पुरातात्विक धरोहरों से है।

- **अटाला मस्जिद**

अटाला मस्जिद शर्की स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। विशाल मेहराबें और ऊँचे प्रवेश द्वार इसकी विशेषता हैं।

- **जामा मस्जिद**

जामा मस्जिद जौनपुर अपनी भव्यता और स्थापत्य संतुलन के लिए प्रसिद्ध है।

- **शाही किला**

शाही किला जौनपुर सामरिक और प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण संरचना थी।

- **लाल दरवाजा मस्जिद**

लाल दरवाजा मस्जिद स्थानीय शिल्पकला और इस्लामी स्थापत्य के समन्वय का उदाहरण है।

6. स्थापत्य कला के प्राचीन अवशेष

जौनपुर की मस्जिदों और किलों में प्रयुक्त पत्थर और स्तंभ अक्सर पुराने मंदिरों या भवनों के अवशेष हैं।

- **स्तंभों की बनावट**: शाही किले और अटाला मस्जिद के स्तंभों पर बनी 'घट-पल्लव' और 'लताओं' की नक्काशी स्पष्ट रूप से गुप्तकालीन भारतीय शैली को दर्शाती है।
- **शाही पुल के पास के अवशेष:** गोमती के पुराने तटों पर खुदाई में मिली ईंटों का आकार कुषाण कालीन ईंटों से मिलता-जुलता है।
- **अटल देवी का मंदिर**: इतिहासकारों (जैसे ए. फुहरर) के अनुसार, वर्तमान अटाला मस्जिद प्राचीन अटल देवी के मंदिर के स्थान पर ही निर्मित है, जिसकी सामग्री का उपयोग मस्जिद के निर्माण में किया गया था।

पुरातात्विक साक्ष्य

- **मौर्य एवं गुप्त काल :** जौनपुर जनपद के विभिन्न स्थानों से प्राप्त मृदभांड (Pottery) और ईंटें मौर्यकालीन सभ्यता की ओर संकेत करती हैं। गुप्त काल के दौरान, यह क्षेत्र मगध और कन्नौज के प्रभाव क्षेत्र के बीच एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केंद्र था।
- **पुरातात्विक अवशेष:** अटाला मस्जिद और शाही किले की नींव में प्रयुक्त विशाल प्रस्तर खंड (Stone Blocks) और उनके ऊपर की नक्काशी स्पष्ट रूप से गुप्तकालीन 'घट-पल्लव' शैली को प्रदर्शित करती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

जौनपुर का इतिहास 1359 ईस्वी से शुरू न होकर हजारों वर्ष पुराना है। पुरातात्विक साक्ष्य चीख-चीख कर कह रहे हैं कि शर्की वास्तुकला की नींव प्राचीन भारतीय स्थापत्य के मलबे पर टिकी है। यदि जफराबाद और जमैथा जैसे स्थलों का वैज्ञानिक उत्खनन (Excavation) कराया जाए, तो जौनपुर का प्राचीन गौरव विश्व पटल पर एक नई पहचान बना सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कनिंघम, ए. (1871): 'आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट्स'।
2. फुहरर, ए. (1889): 'द शर्की आर्किटेक्चर ऑफ जौनपुर'।
3. पांडेय, आर.बी.: 'प्राचीन भारत का इतिहास'।
4. स्थानीय गजेटियर: जौनपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1908)।
5. सैय्यद इकबाल अहमद :'जौनपुर का इतिहास'।
6. डॉ. जे.पी. सिंह : 'जौनपुर जनपद का इतिहास एवं प्रशासन (1858-1919)' ।
7. हेमा उनियाल : 'जौनसार-बावर, रवां-जौनपुर: समाज, संस्कृति, वास्तुशिल्प' ।
8. सतीश चन्द्र: 'मध्यकालीन भारत का इतिहास' ।
9. सुमन मिश्रा : 'जौनपुर की सूफ़ी परंपरा' ।